काव्यानंद

पाठ्य पुस्तक

बी.सी.ए. / B.C.A.
– द्वितीय सेमिस्टर

सी.बी.सी.एस.
C.B.C.S.

सम्पादन
डॉ. नीता हिरेमठ
नागराजन ई.एम.

प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

काव्यानंद

पाठ्य पुस्तक

बी.सी.ए. / B.C.A.
– द्वितीय सेमिस्टर

सी.बी.सी.एस.
C.B.C.S.

सम्पादन
डॉ. नीता हिरेमठ
नागराजन ई.एम.

प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

KAVYANAND : Edited By Dr. Neeta Hiremath & Nagarajan E.M.
Published by Registrar, Bangalore Central University,
Bangaluru-560056
Pp. 37 + vii

© बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय
प्रथम संस्करण – 2019

प्रधान संपादक
डॉ. शेखर

मूल्य :

प्रकाशक
कुलसचिव
बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

24. Factor	उपादान
25. Facsimile	प्रतिकृति
26. Flip Flop	उलट पलट
27. Micro Circuit	सूक्ष्म परिपथ
28. General purpose computer	व्यापक प्रयोजन अभिकलित्र
29. Graphical Computation	आलेखी परिकलन
30. Nuclear Track	नाभिक पथ
31. Numerical	संख्यात्मक
32. Opaque	अपारदर्शी
33. Impeder	प्रतिबाधक
34. Pack ice	बर्फ पुंज
35. Incoming	आगामी
36. Index error	सूचक त्रुटि
37. Parametrix	प्राचलक
38. Key off	कुंजीयन बन्द
39. Jerk	झटका / प्रतिक्षेप
40. Air Gun Mechnism	वायु विस्फोट विधि
41. Lapping	सूक्ष्म घर्षण
42. Layer	परत
43. Equivalent	तुल्यांक , तुल्यमान
44. Leading	अग्रय
45. Gravity	गुरुत्वाकर्षण
46. Evaporated	वाष्पित
47. Visual Signal	दूरदर्शन संकेत
48. Expander	प्रसारित
49. Vibration	कम्पन
50. Velocity	वेग

परिशिष्ट – 2

वैज्ञानिक शब्दावली

01. Ability	योग्यता
02. Abnormal	असामान्य
03. Absent Reflection	लुप्त परावर्तन
04. Actitude	तुगंता, उच्चता
05. Barrier	रोधिका / अवरोधक
06. Column	स्तंभ
07. Back ground exposure	पृष्ठभूमि उच्छादन
08. Component	घटक
09. Balanced Amplifier	संतुलित प्रवर्धक
10. Barren	बंजर
11. Constant	स्थिर /ऊसर
12. Cooler	शीतल यंत्र
13. Count Down	अवगणनांक
14. Cubic	घनाकृति
15. Compact ability	सहनशीलता
16. Dump	निष्कास
17. Decoding	कूटवाचन
18. Diagonal	विकर्ण
19. Digital Computer	अंकीय अभिकलित्र
20. Dismantle	उद्ध्वंसन
21. Edge	किनारा
22. Electrical	विद्युत
23. Elevation	उत्थान / उन्नयन

भूमिका

बेंगलूर विश्वविद्यालय 2014 – 2015 शैक्षिक वर्ष से सी.बी.सी.एस सेमिस्टर पद्धति से स्नातक वर्ग चला रहा है, किन्तु बेंगलूरु विश्वविद्यालय के विभाजन के फलस्वरूप बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय की ओर से आगामी 2019–2020, 2020–2021 तथा 2021–2022 शैक्षणिक वर्षों के लिए नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण भी उपर्युक्त आधार पर ही स्नातक वर्ग हेतु किया गया है।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी–अध्ययन–मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

संपादक–मण्डल का विश्वास है कि यह पद्य–संकलन छात्र–समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इस पाठ्य–पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है ।

इस संकलन को अल्प समय में सुन्दर रूप से छापने वाले कुल सचिव बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा कर्मचारियों के प्रति भी हम आभारी हैं।

प्रो. जाफट. एस
कुलपति
बेंगलुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बेंगलूरु

महिला थीं। वे दो बार जेल भी गई थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री, सुधा चौहान ने मिला तेज से तेज नामक पुस्तक में लिखी है। इसे हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। वे एक रचनाकार होने के साथ–साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं। डॉश मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संघर्ष के जीवन पर प्रकाश डालती है। साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है। 15 फरवरी 1948 को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्राकुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नए नियुक्त एक तटरक्षक जहाज़ को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया है। भारतीय डाकतार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक–टिकट जारी किया है।

कहानी संग्रह : बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे साधे चित्र (1947),

कविता संग्रह : मुकुल, त्रिधारा,

जीवनी : मिला तेज से तेज

कहते हैं कि धरती के प्रत्येक देश के उत्कर्ष एवं उन्नति के मूल में कर्मवीर की कार्य तत्परता और बलिदान का योगदान है। कर्मवीर भीड़ में कभी चंचल नहीं दिखाई देते। वे आसमान के फूलों को नहीं तोड़ते। मन में करोड़ों की सम्पदा नहीं जोड़ते, प्रत्यत श्रम जल बहाकर देश को सम्पन्न बनाते हैं। संसार के प्रत्येक महान कार्य में कर्मवीर के धैर्य, कार्य, पटुता और बलिदान सक्रिय हैं। प्रस्तुत कविता में कर्मयोग की नई व्याख्या विशेष दृष्टव्य है। भाषा सरल एवं भावानुकूल है।

*****

सुभद्रा कुमारी चौहान

उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थीं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान, चार बहने और दो भाई थे। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख–रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। 1919 में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं। 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम

प्रकाशक की बात

बेंगलूर केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने स्नातक–वर्गों के लिए जो सेमिस्टर पद्धति (सी.बी.सी.एस.) लागू किया है, उसके अनुसार हिन्दी–अध्ययन–मण्डल ने अपने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

पाठ्य–पुस्तक को समय पर तैयार करने में डॉ. नीता हिरेमठ और नागराजन ई.एम. ने बडा सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

विश्वविद्यालय की ओर से पाठ्य–पुस्तकों को प्रकाशित कराने में कुलपति प्रो. जाफट. एस जी ने अत्यन्त उत्साह दिखाया है। एतदर्थ मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। इस पुस्तुक को सुन्दर रूप से छापने वाले मुद्रणालय कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

कुलसचिव
बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय

अध्यक्ष की बात

बेंगलूर केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षणिक क्षेत्र में नये–नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को आज के संदर्भ के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार रुपित करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

सेमिस्टर पद्धति (सी.बी.सी.एस.) के अनुकूल स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इन नये पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण में कुलपति महोदय प्रो. जाफट. एस जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, एतदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

पुस्तक के प्रकाशक, कुलसचिव बेंगलूरु केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा मुद्रणालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
बेंगलूरु विश्वविद्यालय

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्यकार के रूप में विख्यात है। भावुकता, राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना, जातीय एकता का संदेश उनके काव्य के मूल आधार रहे हैं। प्रिय प्रवास में कृष्ण को लोकनायक एवं राधा को लोकसेविका के रूप में चित्रित कर उन्होंने अपने सुधारवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। नवीन उद्भावनाओं की सृष्टि कर अपने काव्यों को बड़ा ही आकर्षक बनाया है। उन्होंने ब्रज भाषा एवं खड़ी बोली में रचनाएं कीं। एक ओर वे सरल एवं सहज भाषा को अपनाते हैं और दूसरी ओर संस्कृत निष्ठ पदावली की छटा दिखाते हैं। भाषा पर असाधारण अधिकार, सरलता, सहजता, उक्ति वैचित्र्य, व्यंग्य एवं ओज की दृष्टि से इनकी रचनाएं उच्च कोटि की है।

रचनाएं : प्रियप्रवास, वैदेही, वनवास, चुभते–चौपदे, चोख चौपदे, पद्य–प्रसून, बोल–चाल, रस–कलश आदि काव्य रचनाएं हैं।

खड़ी बोली के सर्वप्रथम महाकवि हरिऔध की प्रस्तुत कविता में कर्मवीर के महान गुणों का वर्णन किया गया है। कर्म के विश्वास रखने वाला कर्मवीर कहलाता है। कवि

स्थान है। नई कविता के योग्य नई काव्य भाषा को गढ़ने का श्रेय उन्हें जाता है। भावों को बड़ी ही ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करते हैं। प्रेम और सौंदर्य के साथ प्रगतिवाद के प्रति भी आकृष्ट हुए। शोषण, अन्याय और युद्ध का विरोध करते रहे। उन्होंने गीत शैली का प्रयोग किया।

रचनाएं : मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख, चमकीले, कल्पांतर, जो बंध नहीं सका आदि प्रमुख रचनाएं हैं।

गिरिजाकुमार माथुर की प्रस्तुत कविता में खत की महत्ता का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। खत का वर्णन इस कविता में भिन्न–भिन्न रूपों में किया गया है। उसके पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व को भी दर्शाया गया है। खत घर का निजी अखबार है। अकेले मानव का यह आसरा है, प्यार और मैत्री की निशानी है। अपने प्रिय व्यक्ति की ऊँगलियों से गूँथी अक्षरों की डोर है। यह दूर की अमूल्य मुद्रा भेंट है जो मानों अशोक वन की सीता की अंजली में मुद्रिका के रूप में गिरी हो। कवि की कल्पना की सुन्दर उड़ान प्रस्तुत कविता में परिलक्षित है।

*****

संपादक की बात.....

साहित्य किसी समाज को समझने–परखने और अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है। इसलिए साहित्य और समाज के विविध सरोकारों पर चर्चाएं होती रहती हैं और भिन्न–भिन्न कसौटियों पर इसके मूल्यांकन भी होते रहते हैं। प्रत्येक रचनाकार के पास एक बिम्ब होता है, जिसमें वह जीता है और लगातार अपने युग विशेष की परिस्थितियों से संघर्षरत रहता है, उनसे प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है।

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ करने वाले सिद्ध और नाथ पंथी योगी समस्त भारत में घूम–घूम कर अपने काव्यों के माध्यम से आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक राष्ट्र की एकता का प्रचार करते रहे। इन्हीं सिद्ध और नाथ पंथियों के प्रयास से भाषा का विकास हुआ, जिसे कालान्तर में या आज हिन्दी कहा जाता है।

वीरगाथा काल से लेकर आधुनिक काल की खड़ी बोली तक कई कवियों ने हिन्दी पद्य साहित्य को समृद्ध किया है। लेकिन भूमण्डलीकरण, निजीकरण, व्यावसायिकता और बाजारवाद के इस युग में साहित्य की प्रासांगिकता लुप्त न हो जाये, इसलिए युवा पीढ़ी के इस वर्ग के समक्ष साहित्यिक विचार रखने का प्रयास किया गया है, जो बदलते हुए परिवेश से अधिक प्रभावित है। युवा पीढ़ी में एक सतही मानसिकता पनप रही है, जिसके कारण सार्थक जीवन मूल्यों से उनके

भटकने की संभावना बढ़ गयी है। इस संदर्भ में यह अत्यावश्यक है कि उनमें अपने देश, समाज और साहित्य के प्रति जिम्मेदारी निभाने की सोच विकसित हो। इस उद्देश्य से प्रस्तुत काव्य संग्रह 'काव्यानंद' में ऐसी कुछ कविताओं का चयन किया गया है जो बीसीए के विद्यार्थियों को अपने जीवन में प्रगतिशील होने के साथ–साथ भारतीय समाज, साहित्य और संस्कृति से भी जोड़े रखे सके।

प्रस्तुत संकलन में जिन कवियों की कविताएं संग्रहित हैं उनके प्रति हम आभारी हैं। आशा करते हैं कि प्रस्तुत पुस्तक काव्यानंद विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकार की भावना के साथ–साथ उनमें मानवीय मूल्यों को भी प्रबल करने में सक्षम होगी।

डॉ. नीता हिरेमठ
नागराजन ई.एम.

है। कवि के काव्य में देश–प्रेम और भक्ति भावना को प्रमुख स्थान मिला है। कवि भगवान का निवास महलों और मन्दिरों की अपेक्षा दीन–हीन के हृदय में मानते हैं। भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। ओज प्रसाद और माधुर्य को कवि ने अपनी काव्य रचनाओं में स्थान दिया है। उनकी शैली स्वाभाविक और स्वच्छंद है। वर्णनात्मक और भावात्मक दोनों ही प्रकार की शैली का सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है। जीवन सन्देश कविता में कवि ने मानव जीवन को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। उसका कहना है कि मानव के लिए यह संसार एक परीक्षा स्थल है। दुख सदा उसकी बुद्धि का विकल करता है। किन्तु स्वात्मबल से सत्पुरुष हर प्रश्न का हल सहज रूप से करते हैं। सदा लोक कल्याण में निरत होकर जीवन सफल बनाते आगे बढ़ना है। संसार में सुख पाने के लिए दुख को सहायक बनाना पड़ता है। देश, जाति और धरती माँ के लिए सदा सत्कार्य करते हुए आगे बढ़ना होगा यही जीवन सन्देश है। जिसमें कर्त्तव्य और प्रेम भावना ही समायी हुई है।

*****

गिरिजाकुमार माथूर

लेखक का जन्म ई. 1919 में हुआ। नई कविता के कवि गिरिजाकुमार माथुर का हिन्दी काव्य जगत में विशिष्ट

माता–पिता, भाई–बहन, बेटे–बहुएँ हंसी–खुशी से रहते थे। अतिथि की पूछताछ की जाती, पड़ोसियों के साथ स्नेह सिक्त व्यवहार किया जाता था। युग बदला, परिवेश टूट गए। अब ईन–मीन–तीन लोग बहुत सारे कमरों में रहने लगे हैं। तीनों बाहर चले जाते तो आने वाले को ताला देखकर वापस लौटना पड़ता है या ताले में पर्ची खोसकर जाना पड़ता है। संयुक्त परिवार की संकल्पना फोटो अलबम में बाकी रह गयी है। स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, लगाव, अपनापन, विश्वास, सहयोग, रिश्ते–नाते की बुनियाद पर परिवार टिका रहता था किन्तु आज यह बुनियाद ही हिल गई है। टूटते हुए मूल्यों के बीच जीवन के बिखराव में मनुष्य स्वयं को ढूँढ रहा है। आज के मनुष्य का बिखराव, अकेलापन, टूटन, अजनबीपन, संत्रास, घुअन, कविता की मूल संवेदना है।

*****

रामनरेश त्रिपाठी

स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा में रामनरेश त्रिपाठी का अपना विशेष स्थान रहा है। कवि की काव्य कृतियों में आदर्शवादी भावना सामने आती है। देश, संस्कृति और सभ्यता के प्रति अनुराग रखते हुए राष्ट्रीय भावना को अपनाया

अनुक्रमणिका

01. भूषण के छंद	भूषण	01
02 प्रेमामृत	मीरा	03
03 कलियों से	हरिवंशराय बच्चन	05
04 संयुक्त परिवार	राजेश जोशी	07
05 जीवन सन्देश	रामनरेश त्रिपाठी	09
06 खत	गिरिजाकुमार माथुर	11
07 कर्मवीर	अयोध्यासिंह उपाध्याय	14
08 खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी	सुभद्रा कुमार चौहानी	16
परिशिष्ट–1	कवि परिचय एवं शब्दार्थ	22
परिशिष्ट–2	वैज्ञानिक शब्दावली	36

देते रहना तथा मनुष्य का अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति की निश्छलता का दुरुपयोग करना दिखाया गया है।

*****

राजेश जोशी

राजेश जोशी बहुआयामी साहित्यकार हैं। कवि, कहानीकार, नाटककार, पटकथाकार, अनुवादक, सम्पादक आदि विभिन्न रूपों में साठोत्तर साहित्यकारों में राजेश जोशी की पहचान बनी हुई है। राजनीतिक चेतना तथा मार्क्सवादी चेतना उनकी कविता का प्रमुख स्वर है। उनकी कविता, समय, स्थल और गतियों के अछूते संदर्भों से भरी हुई है। अपने मनुष्य होने का अहसास और उसे सुरक्षित रखने की जद्दोजहद उनकी कविता में द्रष्टव्य हैं।

उनके काव्य संग्रह हैं : एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी का चेहरा, नेपथ्य में हँसी। कहानी संग्रह हैं – सोमवार और अन्य कहानियाँ और उनके नाटक हैं – जादू जंगल, अच्छे आदमी, टंकरा का गाना आदि।

उनको माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा सम्मान, शमशेर सम्मान और पहल सम्मान प्राप्त है।

संयुक्त परिवार कल की बात हुई। छोटे से घर में

सुरक्षित है। इतने विस्तृत और विराट श्रोतवर्ग का विरले ही कवि दावा कर सकते हैं। बच्चन की कविता इतनी सर्वग्राह्य और सर्वप्रिय है क्योंकि बच्चन की लोकप्रियता मात्र पाठकों के स्वीकरण पर ही आधारित नहीं थी। जो कुछ मिला वह उन्हें अत्यन्त रुचिकर जान पड़ा। वे छायावाद के अतिशय सुकुमार्य और माधुर्य से उसकी अतीन्द्रिय और अति वैयक्तिक सूक्ष्मता से, उसकी लक्षणात्मक अभिव्यंजना शैली से उकता गये थे। उर्दू की गजलों में चमक और लचक थी, दिल पर असर करने की ताकत थी, वह सहजता और संवेदना थी, जो पाठक या श्रोता के मुँह से बरबस यह कहलवा सकती थी कि मैंने पाया यह कि गोया वह भी मेरे दिल में है। मगर हिन्दी कविता जनमानस और जन रुचि से बहुत दूर थी। बच्चन ने उस समय मध्यवर्ग के विक्षुबध, वेदनाग्रस्त मन को वाणी का वरदान दिया। उन्होंने सीधी, सादी, जीवन्त भाषा और सर्वग्राह्य, गेय शैली में, छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की जगह संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से, अपनी बात कहना आरम्भ किया।

प्रमुख कृतियाँ : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, बंगाल का काव्य।

प्रस्तुत कविता कलियों से कविता में प्रकृति एवं मनुष्य बीच संवाद माध्यम से प्रकृति का निःस्वार्थ मनुष्य को

1. भूषण के छंद

भूषण

(1)

सहि तनै सरजा तव द्वार प्रतिच्छन दान की दुंदुभि बाजै।
भूषन भिच्छुक भीरन को अति भोजहु तें बढ़ि मौजनि साजै।।
राजन को गन, गजन! के गनै? साहिन मैं न इती छवि छाजै।
आजु गरीबनेवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै।।

(2)

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।
कंदमूल भोग करैं, कंदमूल भोग करैं,
तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती है।।
भूषण सिथिल अंग, भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती है।।
भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ातीं ते वै नगन जड़ाती हैं।।

(3)

सजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाब बिहद नगारन के,
नदी–नद मद गैबरन के रलत है।।

ऐल–फैल खैल–भैल खलक में गैल–गैल,
ग्जन की ठेल–पेल सैल उसलत है।
तारा सौ तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

(4)

पीरी पीरी हुन्नै तुम देत हो मँगाय हमें,
सुबरन हम सों परखि करि लेत हौ।
एक पल ही मैं लाख रूखन सों लेत लोग,
तुम राजा है कै लाख दीबे को सचेत हौ।।
भूषन भनत महाराज सिवराज बड़े,
छानी दुनी ऊपर कहाए केहि हेत हौ?
रीझि हँसी हाथी हमैं सब कोऊ देत,
कहा रीझि हँसी हाथी एक तुम हियै देत हौ।।

(5)

इन्द्र जिमि जम्भ पर, बाड़व सुअम्भ पर,
रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर, सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाह पर राम–द्विजराज है।
छावा द्रुम दण्ड पर, चीता–मृग–झुण्ड पर,
भूषन बितुण्ड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।

तुम्हारा सौंदर्य, म्हाँने – हमें
5. पाँव परु – पैरों पर पड़ूँ, चेरी – दासी, पैड़ों – मार्ग, गैल – रास्ता, चँदण – चन्दन की लकड़ियाँ, जोत – ज्योति, आत्मा

*****

हरिवंशराय बच्चन

27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में जन्मे हरिवंशराय बच्चन हिन्दू कायस्थ परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। यह प्रताप नारायण श्रीवास्तव और सरस्वती देवी के बड़े पुत्र थे। इनको बाल्यकाल से बच्चन कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ बच्चा या संतान होता है। बाद में हरिवंशराय बच्चन इसी नाम से मशहूर हुए। हरिवंशराय बचन की शिक्षा इलाहाबाद तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में हुई। इन्होंने कायस्थ पाठशालाओं में पहले उर्दू की शिक्षा ली जो उस समय कानून की डिग्री के लिए पहला कदम माना जाता था। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएचडी किया। बच्चन की कविता के साहित्यिक महत्व के बारे में अनेक मत हैं। बच्चन के काव्य की विलक्षणता उनकी लोकप्रियता है। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि आज भी हिन्दी के ही नहीं, सारे भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में बच्चन का स्थान

है। मीराबाई के स्फुट पद मीराबाई की पदावली (सं. परशुराम चतुर्वेदी), मीरा माधुरी (सं. ब्रजरत्न दास) नामक पुस्तकों में संगृहित हैं।

प्रेमामृत में मीराबाई के कुछ विशिष्ट पद प्रस्तुत किये गये हैं। मीरा हरि अविनासी को समर्पित थीं। उनकी भक्ति में प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, व्याकुलता आदि व्यापार पाये जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार उनके सब पदों में प्रेम की तल्लीनता पाई जाती है। उनका कृष्ण प्रेम निर्मल एवं प्रगाढ़ है। मीरा और कृष्ण का सम्बन्ध मधुर तथा चिरन्तन है। उनकी विरह वेदना तीव्र एवं अपार है। उनका प्रेम मांसल नहीं, आत्मिक और आध्यात्मिक है।

*****

1. रामरतन – राम नाम रूपी रत्न, खूटे – कम होते हैं, वाँकु – उसको, होत सवायो – बढ़ता है, धरणी – जमीन, सरणें – शरण में, चित्त लायौ – मन लगाना।
2. म्हाँरौ – मेरा, रैण – रात, वाके – उसके, वाहि – उसे, तितही – वहीं, बेंचै – बेचना
3. बदरा – बादल, अम्बर – आकाश, भाग भलौ जिन पायौ – पाने वाले का भाग्य बड़ा है।
4. वार्‌या – अर्पिट करना, निछावर करना, थारे रूप –

2. प्रेमामृत

मीराबाई

रामरतन धन पायो मैया, मैं तो रामरतन धन पायो।
खरचे न खूटे, वाकुँ चोर न लूटे, दिन दिन होत सवायो।।मैया।।
नीर न डूबे, वाकुँ अग्नि न जाले, धरणी धरयो न समायौ।।मैया।।
नाँव को नाँव भजन की बतियाँ, भवसागर से तारयौ।।मैया।।
मीराँ प्रभु गिरिधर के सरणे, चरण–कँवल चित्त लायौ।।मैया।।

मैं गिरिधर के घर जाऊँ।
गिरिधर म्हाँरौ साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।।
रैण पड़ै तब ही उठि जाउँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैण दिनाँ वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ–त्यूँ वाहि रिझाऊँ।।
जो पहिरावै सोई पाहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उण की प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊँ।।
जहाँ बिठावे तितही बैठँ, बेंचै तो बिक जाऊँ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, बार–बार बलि जाऊँ।।2।।

बदरा रे तू जल भरि लै आयौ।
छोटी–छोटी बूँदन बरसन लागी, कोयल सबद सुनायौ।
गाजै–बाजै पवन मधुरिया, अम्बर बदराँ छायौ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, भाग–भलौ जिन पायौ।।3।।

स्याम–बिना सखि, रहाँ ना जावाँ।
तन–मन–जीवन प्रीतम वार्‌याँ, थारे रूप लुभावाँ।।

खानपान म्हाँने फीका लागाँ, नैना रह्याँ मुरझावाँ।
निसि दिन जोवाँ बाट मुरारी, कम रो दरसन पावाँ।।
बार–बार थारी अरज करूँ शूँ, रैन गया दिन जावाँ।
मीराँ रे हरि थें मिल्या बिन, तरस–तरस जिय जावाँ।।4।।

जोगी मत जा, मत जा, मत जा।
पाँई परू, मै चेरी तेरी हौं, जोगी मत जा, मत जा।।
प्रेम भगति को पैड़ौ ही न्यारौ, हमकूँ गैल बता जा।
अगर चँदण की चिता बनाऊँ, अपणे हाथ जला जा।।जोगी।।
जल–बल भई भई भसम की ढेरी, अपने अंग लगा जा।
मीराँ कहै प्रभु गिरिधर नागर, जोत में जोत मिला जा।।जोगी।।

✍❒✍❒

5 . अम्भ – समुद्र, दंभ – घमंडी, रघुकूल राज – श्रीरामचन्द्र, बारिबाह – बादल, रतिनाह – कामदेव, रामद्विजराज – परशुराम, दावा – वन की अग्नि, द्रुम दण्ड – वृक्षों की शाखाएं, बितुण्ड – हाथी, तम अंस – अंधकार का समूह, कान्ह – श्रीकृष्ण

*****

मीराबाई

हिन्दी की अत्यन्त लोकप्रिय कवयित्री मीराबाई का जन्म राजस्थान के कुडकी नामक गाँव में सन् 1504 में हुआ। इनके पिता मेड़तिया शाखा के राठौड़ रतनसिंह थे। मीराबाई का विवाह मेवाड़ के महाराणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र कुंवर भोजराज से सन् 1516 में हुआ। दुर्भाग्यवश वैवाहिक जीवन के सातवें वर्ष में ही मीरा को वैधव्य प्राप्त हुआ। बचपन से ही कृष्ण भक्ति में रंगी हुई मीरा ससुराल में भी दिन–रात और घर–बाहर कन्हैया के भजन ध्यान में तल्लीन रहने लगीं। लोक–लाज से बेपरवाह मीरा को राणा की ओर से भारी यातनाएं भुगतनी पड़ीं। पर वे विचलित नहीं हुई। प्रेमदीवानी मीरा का देहान्त सन् 1563 में हुआ। मीराबाई की कुल ग्यारह रचनाएँ मानी जाती है, पर उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध

हैं, सिवराज – शिवाजी महाराज, बीर – वीर, त्रास – डर, नगन – रत्नों, नगन – नग्न।

3. चतुरंग – रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सैनिक (चार प्रकार की सेना को चतुरंगिनी सेना कहते हैं।) रंग – उत्साह, तुरंग – घोड़ा, चलत है – कूच करते हैं, भनत – कहते हैं, बिहद – बहुत सारे, नाद – ध्वनि, नगारन – नगाड़ों, नद – नदी का ही पुल्लिंग रूप, मद – मतवाले, गैबरन – हाथियों, रलत – मिलता है, मिलकर बहता है, ऐल – सेना का समूह, फैल – फैलने से, खैल – भैल – खलबाली मच जाना, खलक – संसार, गैल–गैल – प्रत्येक गली में, ठेल–पेल – धक्कमधक्का, सैल – पहाड़, उसलत – उखड़ जाते हैं, तारा – नक्षत्र, तरनि – सूर्य, धूरि धारा में – धूल के समूह में, जिमि– जैसे, थारा – थैली, पारा – शक्करपारा, पारावार – समुद्र, हलत है – हिलता है।

4. पीरी – पीला अर्थात स्वर्ण, हुन्नै – मुहरें, अशर्फियाँ, सुबरन– सुन्दर पद, लाख – लाख की बनी चूड़ियाँ, वैसी वाली लाख, लाख रंग का सील करते समय मोम की आगे में गलाकर चिपकाते हैं। रूखन से – पेड़ पर से पेड़ जेसे पीपल आदि की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से लाख बनता है, लाख – लाख रुपये, भनत – कहते हैं, केहि – क्यों, रीझि – खुश होकर, हाथी –हाथ मिलाना, हाथी (जानवर)

3. कलियों से

हरिवंशराय बच्चन

अहे, मैंने कलियों के साथ,
जब मेरा चंचल बचपन था,
महा निर्दयी मेरा मन था,
अत्याचार अनेक किए थे,
तोड़ इन्हें बागों से लाता,
छेद–छेद कर हारा बनाता!
क्रूर कार्य यह कैसे करता,
सोच इन्हें हूँ आहें भरता।
कलियों, तुमसे क्षमा माँगते ये अपराधी हाथ।

'अहे, वह मेरे प्रति उपकार!
कुछ दिन में कुम्हला ही जाती,
गिरकर भूमि समाधि बनाती।
कौन जानता मेरा खिलना?
कौन, नाज से डुलना – हिलना?
कौन गोद में मुझको लेता?
कौन प्रेम का परिचय देता?
मुझे तोड़ की बड़ी भलाई,
काम किसी के तो कुछ आई,
बनी रही दो – चार घड़ी तो किसी गले का हार'।

'अहे, वह क्षणिक प्रेम का जोश!
सरस–सुगंधित थी तू जब तक,

बनी स्नेह भाजन थी तब तक
जहाँ तनिक सी तू मुरझाई,
फेंक दी गई, दूर हटाई।
इसी प्रेम से क्या तेरा हो जाता है परितोष?
बदलता पल–पल पर संसार
हृदय विश्व के साथ बदलता,
प्रेम कहाँ फिर लहे अटलता?
इससे केवल यही सोचकर,
लेती हूँ सन्तोष हृदय भर .....
मुझको भी था किया किसी ने कभी हृदय से प्यार!'

✍❒✍❒

लगाकर उनका सम्मान किया था।

भूषण की कविता वीर रस की कविता है। शिवाजी की शूरता का, दानवीरता का, यश का और युद्ध कला का वर्णन कवि ने रससिद्ध वाणी में किया है। वीर रस के साथ–साथ रौद्र और भयानक रस भी उनके काव्य में मिलते हैं। भूषण द्वारा रचे गये तीन ग्रन्थ है – शिव बावनी, छत्रसाल दशक और विशराज भूषण।

*****

शब्दार्थ

1. सहि – शाहजी, तनै – पुत्र, सरजा – शिवाजी को दी गई उपाधि, तव – आपके, दुंदुभि – नगाड़ा, भीरन – भीड़, भेजहु – राजा भोज, तें – से, बढ़ि – अधिक, मौजनि – आनंद, साजै – प्राप्त करना, गन – हैं ही क्या, गनै – गिनती में, साहिन मैं – बादशाहों में, गरीबनेवाज – दीनों पर कृपा करने वाला, मही – पृथवी, तुही – आप है।

2. घोर – बड़े, मंदर – महल, रहनवारी – रहने वाली, मंदर – पर्वतों की गुफाओं में, कंदमूल – बढ़िया मिठाइयाँ, कंदमूल – गाजर, मूली आदि, तीन बेर – दिन में तीन बार, वै – मुगलों की स्त्रियाँ, तीन बेर – बेरी के तीन बेर, भूषन – गहने, भूषन – भूख, बिजन – पंखा, डुलाती – झलना, बिजन – निर्जन प्रदेश, डुलाती – घूमना, भूषन – कवि भूषण, मनत – कहते

परिशिष्ट – 1

कवि परिचय एवं शब्दार्थ

भूषण

रीतिमुक्त कवियों में वीर रस के कवि के रूप में भूषण सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म संवत् 1670 में और मृत्यु संवत् 1772 में मानी जाती है। ये कानपुर जिले के तिकवांपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी थी। कहते हैं रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिन्तामणि और मतिराम इनके भाई थे। भूषण का असली नाम क्या था इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों के मतानुसार भूषण एक उपाधि है जो उनको चित्रकूट के सोलंकी वंश के राजा रूद्रप्रताप सिंह ने दी थी और उन्हीं के यहाँ वे आश्रम लिया था।

कहते हैं कि भूषण शिवाजी की प्रशंसा में काव्य रचना करके उन्हें 52 बार सुनाए और शिवाजी से 52 लाख रुपए पुरस्कार प्राप्त किए तथा उनके दरबारी कवि बने। भूषण का सम्बन्ध छत्रसाल महाराज से भी रहा था। वे भूषण का बड़ा सम्मान करते थे। कहते हैं कि भूषण को अपने यहाँ से विदा होते समय छत्रसाल ने भूषण की पालकी में अपना कंधा

4. संयुक्त परिवार

राजेश जोशी

मेरे आने से पहले ही कोई लौट कर चला गया है,
घर के ताले में उसकी पर्ची खुसी है

आया होगा न जाने किस काम से वह
न जाने कितनी बातें रही होंगी मुझसे कहने को
चली गयी हैं सारी बातें भी लौट कर उसी के साथ
रास्ते में हो सकता है कहीं उसने पानी तक न पिया हो
सोचा होगा शायद उसने कि यही मेरे साथ पियेगा चाय
कैसा लगता है इस तरह किसी का घर से लौट जाना

इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा
बचपन के उस पैतृत घर से
वहाँ बाबा थे, दादी थी, माँ और पिता थे
लड़ते–झगड़ते भी साथ–साथ रहते थे सारे भाई बहन
कोई न कोई हर वक्त बना ही रहता था घर में
पल दो पल को बिठा ही लिया जाता था हर आने वाले को
पूछ लिया जाता था गुड और पानी को
खबर मिल जाती थी बाहर गए आदमी की
ताला देखकर शायद ही कभी कोई लौटा होगा घर से

टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ
अब इस घर में रहते हैं ईन मीन तीन जन
निकलना हो कहीं तो सब निकलते हैं एक साथ

घर सूना छोड़ कर
यह छोटा सा एकल परिवार
कोई एक बाहर चला जाये तो दूसरों को
काटने को दौड़ता है घर
नये चलन ने बहुत सहूलियत बख्शी है
कहाँ हो रहा है मिलना जुलना चारों को
कम हो रही है लोगों की जान पहचान
सुख दुख में भी पहले की तरह इकट्ठे नहीं होते लोग
तार से आ जाती है बधाई और शोक संदेश

बाबा को जानता था सारा शहर
पिता को भी चार मोहल्ले के लोग जानते थे
मुझे नहीं जानता मेरा पड़ोसी मेरे नाम से
अब सिर्फ एलबम में रहते हैं
परिवार के सारे लोग एक साथ
टूटने की इस प्रक्रिया में क्या क्या टूटा है
कोई नहीं सोचता
कोई ताला देखकर मेरे घर से लौट गया है।

✍❒✍❒

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये अवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार–पर–वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता–नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

✍❒✍❒

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बड़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुया द्वन्द्व असमानों में।
ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुहँ की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध श्रेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

5. जीवन सन्देश

रामनरेश त्रिपाठी

(1)

यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा स्थल है।
दुख है प्रश्न कठोर, देखकर होती बुद्धि विकल है।
किन्तु स्वात्म–बल–विज्ञ सत्पुरुष ठीक पहुँच अटकल से।
हल करते हैं प्रश्न सहज में अविरल मेधा बल से।

(2)

यही लोक कल्याण कामना यही लोक सेवा है।
यही अमर करने वाले यश–सुरतरु का मेवा है।
जाओ पुत्र! जगत् में जाओ, व्यर्थ न समय गंवाओ।
सदा लोक कल्याण निरत हो जीवन सफल बनाओ।।

(3)

जनता के विश्वास कर्म मन ध्यान श्रवण भाषण में।
वास करो, आदर्श बनो, विजयी हो जीवन रण में।
अति अशांत दुखपूर्ण विश्रृंखला क्रान्ति–उपासक जग में।
रखना अपनी आत्म शक्ति पर दृढ़ निश्चय प्रतिपग में।।

(4)

जग की विषम आंधियों के झोंके सम्मुख हो सहना।
स्थिर उद्देश्य समान और विश्वास सदृश्य दृढ़ रहना।
जाग्रत नित रहना उदारता तुल्य असीम हृदय में।
अन्धकार में शांत चन्द्र सा, ध्रुव सा निश्चल भय में।।

(5)

जन में सुख की प्राप्ति के लिए एक सहायक दुख है।
वही जगाता है सद्गुण को सद्गुण लाता सुख है।
बाधा, विघ्न, विपत्ति, कठिनता जहाँ–जहाँ सुन पाया।
सबके बीच निडर हो जाना दुख को गले लगाना।।

(6)

जगन्नियंता की इच्छा से यह संसार बना है।
उसकी ही क्रीड़ा का रूपक यह समस्त रचना है।
है यह कर्म भूमि जीवों की यहाँ कर्मच्युत होना।
धोखे में पड़ना अलभ्य अवसर से है कर धोना।।

(7)

पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला – पोसा।
किये हुए हैं वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण–चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपूर, कोल्हापूर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों–बात,
कैद पेशवा था बिठुर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र–निपात।
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोयीं रिनवासों में, बेगम ग़म से थीं बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
नागपूर के ज़ेवर ले लो लखनऊ के लो नौलख हार।
यों परदे की इज़्ज़त परदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

6. खत

गिरिजाकुमार माथुर

खत निजी अखबार है घर का
अकेले का सहारा है
मुहब्बत दोस्ती की सुख निशानी है
प्रिय की उँगलियों गूँथी
सँवारी अक्षरों की डोर
तन के बीच पंखुरि–पुल
उनसे मिलने आधा है

वही है दूर की अनमोल मुद्रा भेंट
यद्यपि सहज साधारण
जिससे उमगती मन में
अचानक अनकही सिहरन
लगता आज भी वह तेज चिनगारी
गिरी थी ज्यों उदास अशोक वन में
मुद्रिका प्यारी

वही है मेघदूत नये जमाने का
वही है हंस
दमयंती मिलन को पास लाने का
उनींदे नयन में अनिरुद्धमय
सपना उषा का है

कमल की पंखुरी पर लिखा
गीत शकुंतला का है
या शायद बना काँटा किसी दिल का
कि छूते ही खटकता है
पढ़ते हृदय डरता है
कभी आदेश, झिड़की या उलहना है
कभी कुछ भी न कहना है
छिपाकर बात लाया है
किसी का नाम भर लेकर
किसके पास आया है

खत हवा की लहर सा आजाद है
वह न बंधन जानता है
हठ नहीं वह मानता है
वह न जोर, दबाव, डर के
कायदे पहिचानता है
वह नया हर बार ताजा
इसलिए रसवान है
जो अचानक द्वार आए
वह मधुर मेहमान है

वह तुरत बनता स्पंदन
तेज साँसें, वक्ष धड़कन
चकित नयनों में खुशी
डर, भेद, बेसब्री, समर्पण

महाराष्टर–कुल–देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मरे राजाजी रानी शोक–समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्णा रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,

8. खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी

सुभद्रा कुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।
कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसकी याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध–व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार।

और फिर मन की उमेठन
याद की फिर स्मरण घुमड़न
दूर देशों तक बिछलती दीठ
सूनी नजर की बनता दुराशा है

खत घरू संवाददाता है
हर घर में निजी सुख दुख कहानी
लिए आता है
मगर मन चाहता है
वह जभी आए
हँसी लाए
खुशी लाए
चुटकी भर किरन लाए
न दुख की खाक वह लाए

खत नये आलोक का पन्ना बने
हर घर में हँसी की धूप का झरना बने
स्वस्थ, साबित जिन्दगी का
आइना नन्हा बने।

7. कर्मवीर

अयोध्यासिंह अपाध्याय हरिऔध

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो, किन्तु उचकाते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले – फले।।1 ।।

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
सम्पदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्जवल रतन।।2 ।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैंकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।।
गर्भ से जल राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महा–मंगल रचा देते हैं वे।।
भेद नभ तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।

हैं उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।3 ।।

सब तरह से आज जितने देश है फूले फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव के हैं जहाँ डेरे चले।।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की और जाति की होगी भलाई भी तभी।।4 ।।

✍❒✍❒